पाटलिपुत्र राजकुमार मूलदेव की कथावस्तु अपनी भाषा में प्रस्तुत करें
या मूलदेव का चरित्र - चित्रण करें।

राजकुमार मूलदेव का कथानक अत्यन्त प्राचीन है इसके रचयिता आचार्य देवेन्द्र गणि हैं जिन्होंने बहुत ही सुन्दर एवं सरल ढंग से कथावस्तु प्रस्तुत किया है पाटलिपुत्र नगर में मूलदेव नामक राजकुमार रहता था। वह सभी कलाओं में निपुण एवं दक्ष था, ज्ञान-विज्ञान से सम्पन्न, उदारमन, प्रियभाषी और अत्यन्त रूपवान था।

जुआरी एवं शराबी होने के कारण जब वह प्रजाजनों पर अत्याचार करने लगा तब उसके पिता ने उसे देश से निकालने की सजा दे दी। वह घूमता भटकता हुआ उज्जैनी पहुँचा और एक जादू भरी गोली के प्रयोग से अपना वेश बदल कर एक बौने के रूप में वहाँ रहने लगा। जब मूलदेव सुनता है यहाँ चौसठ कलाओं में कुशल बड़ी घमण्डी देवदत्ता नाम की गणिका रहती है। वही मूलदेव मधुर स्वर में गन्धर्व गीत गाने लगता है मूलदेव के आवाज को सुनकर जानवर भी आकर्षित हो जाते हैं देवदत्ता भी आकर्षित हो जाती है और दासी के द्वारा मूलदेव को बुलवाती है मूलदेव अपने वीणा-वादन से देवदत्ता को पराधीन कर देता है। देवदत्ता मूलदेव से प्रेम करने लगती है। देवदत्ता एक गणिका होते हुए भी गुण से प्रेम करती है न की धन से देवदत्ता की माता अपनी बेटी की शादी एक अचल धनी सार्थवाह से करना चाहती है।

किसी अन्य समय राजा के राजमहल में देवदत्ता ने नृत्य और मूलदेव ने ढोल बजाया। राजा ने खुश होकर देवदत्ता को एक वर देता है देवदत्ता उस वर को राजा के पास धरोहर के रूप में रख देती है। मूलदेव एक गरीब पुरुष था जिसके कारण देवदत्ता की माता कहती है कि तुझे इस मूलदेव को छोड़कर अचल जैसा धनी आदमी से प्रेम करना ही उचित है। देवदत्ता कहती है कि माँ

मैं धन से प्यार नहीं करती हूँ मैं तो व्यक्ति के गुण से प्रेम करती हूँ दोनों की जाँच परीक्षा होती है ईख लाने के लिए दोनों से कहा जाता है मूलदेव दो ईख को भली-भाँति साफ कर छोटे-छोटे टुकड़े कर एक थाल में सुवासित सुगंधित कर लाता है जबकि अचल पत्ता, जड़ सहित एक गाड़ी ईख देवदत्ता के पास गिरा देता है देवदत्ता दोनों में इंगित कर कहती है कि यही दोनों में अन्तर है क्या मैं जानवर हूँ कि अचल पत्ता सहित एक गाड़ी ईख गिरा गया है माँ सोचती है कि देवदत्ता मानने वाली नहीं है अतः अचल से मिलकर मूलदेव को अपमानित करने का प्रयोजन बनाती है वस्तुतः देवदत्ता के साथ मूलदेव को अकेला देखकर अचल मूलदेव को बहुत अपमानित करता है और मूलदेव से नगर छोड़ने को कह देता है

मूलदेव ~~उदास~~ उदास मन से नगर को छोड़ते हुए बदला लेने की भावना से वेन्यातट की ओर चल पड़ता है इसी बीच राह में झोला लिए हुए एक ब्राह्मण दिखाई पड़ा दोनों में बोली हो जाती है दोपहर के समय दोनों एक सरोवर के पास पहुँचते हैं ब्राह्मण भूख के कारण झोले से सतु निकाल कर खाने लगता है मूलदेव को पूछता भी नहीं अंत में दोनों अलग-अलग रास्ते से चले जाते हैं मूलदेव भिक्षा हेतु एक गाँव में प्रवेश करता है उसे खराब उड़द खाने हेतु मिलता है जब जलाशय के पास खाने हेतु पहुँचता तब वहाँ एक महान तपस्वी को पारणा हेतु उड़द को दे देता है गगन तल में गमन करते हुए देवताओं ने मूलदेव के आचरण से प्रभावित होकर कहा – तुम्हें वर माँगना चाहिए अतः मूलदेव को वर देकर देवतागण अन्तर्धान हो जाते हैं

रात्रि होने पर मूलदेव एक यक्षशाला में सो जाता है { रात्रि के अन्तिम प्रहर में स्वप्न के रूप में }

अपने पेट में चन्द्रमा को प्रविष्ट होते हुए देखा, उसी स्वप्न को एक भिखारी ने भी देखा. भिखारी ने एक दूसरे भिखारी से स्वप्न के बारे में बताता है दूसरा भिखारी कहता है कि आज तुम्हें भिक्षा के रूप में अच्छे से अच्छा खाना खाने के लिए प्राप्त होगा. मूलदेव इस बात को सुनकर एक स्वप्न शास्त्री के पास पहुँचता है स्वप्न शास्त्री सुनकर पहले मूलदेव से अपनी कन्या के साथ शादी करने को कहता है और कहता है कि तुम कुछ ही दिनों के उपरान्त राजा के पद को प्राप्त करोगे।

मूलदेव पाँचवें दिन नगर के बाहर एक पेड़ की छाया में सो रहा था। उस नगर के राजा चुनने के लिए पाँच दिव्यवस्तुएँ छोड़ी गयी थी, वे सभी वस्तुएं मूलदेव के पास आ पहुँची। हाथी चिंघाड़ने लगा, घोड़ा हिनहिनाने लगा, कलश अभिषेक करने लगा चवर स्वतः डोलने लगा और मुकुट स्वयं उसके सिर पर आ गया। मूलदेव के पास नगर के सभी लोग मंत्री सहित एकत्रित हो गये। मूलदेव को हाथी पर बिठाकर मंत्री सामन्त आदि ने उनका अभिनन्दन किया। गगनतल से जाते हुए देव ने कहा – यह मनुष्य के रूप में विक्रमादित्य राजा है कोई व्यक्ति इसके आदेश का पालन नहीं करेगा तो उसे कभी क्षमा नहीं मिलेगा।

इधर देवदत्ता अपने पूर्व इनाम प्राप्त करने हेतु राजा के पास जाती है और अपना वृतान्त सुनाती है और अचल को नगर से निष्कासित कराते हुए मूलदेव को खोजने हेतु राजा से आदेश जारी कराती है अचल मूलदेव को जब खोज नहीं पाता है तब वह व्यापार करने हेतु विदेश चला जाता है।

इधर मूलदेव जब राजा होकर पत्र के द्वारा उज्जैनी के राजा के पास समाचार देता है कि देवदत्ता के प्रति मेरा स्नेह है, यदि देवदत्ता की इच्छा हो और

तुमको कोई आपत्ति न हो तो कन्या मेरे पास भेज देना चाहिए। देवदत्ता को राजा सम्मानित कर भेज देता है।

इधर पारस देश से अचल द्रव्यों को एकत्रित कर वेन्या तट पर पहुँचता है और अपने व्यापार में गलत समान लेकर लिए था जो नगर के सिपाही पकड़ लेते हैं और राजा के सम्मुख उपस्थित करते हैं राजा विक्रमादित्य पहचान लेता है और मूलदेव देवदत्ता को बुलाता है देवदत्ता भी अचल को पहचान लेती है मूलदेव और देवदत्ता दोनों ने उसे क्षमा कर देते हैं, और देवदत्ता रानी बनकर सुख पूर्वक जीवन व्यतित करने लगती है।